बाइबल टीचर

वर्ष 20 | फरवरी 2023 | अंक 3

सम्पादकीय

बाइबल बच्चों के बपतिस्में में कहीं नहीं बताती

पवित्रशास्त्र बाइबल में कहीं पर भी कभी छोटे बच्चों का बपतिस्मा हुआ हो कोई उदाहरण नहीं है। आज पूरे संसार में इस झूठी शिक्षा को सिखाया जाता है। कई प्रचारक यह सिखाते हैं कि प्रेरितों 16 में जब दरोगा और उसके परिवार ने बपतिस्मा लिया था तब उसमें बच्चे भी थे। परन्तु हम देखते हैं कि वहां बच्चों के विषय में कुछ नहीं लिखा है। हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि उन्होंने बपतिस्में से पहिले उन्हें सिखाया था। एक छोटे बच्चे को आप सुसमाचार नहीं सिखा सकते, इसलिये बपतिस्मा देने का सवाल ही नहीं उठता। एक और बात यह है कि वे छोटे बच्चों को नहीं बल्कि बड़ों को सिखा रहे थे।

हमें यह जानना चाहिए कि बाइबल के लिखे जाने के बाद बच्चों का बपतिस्मा कई सदियों के बाद आया। यह बपतिस्मा इसलिये आया क्योंकि एक झूठी शिक्षा प्रचलित हो गई थी कि बच्चे जब पैदा होते हैं तो वे आदम के पाप के कारण पापी होते हैं। मित्रों, किसी और व्यक्ति के पाप के कारण कोई पापी नहीं होता। भविष्यद्वक्ता यहेजकेल ने कहा था, ''जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न ही पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा।'' (यहेजकेल 18:20)। परमेश्वर कभी भी पापी आत्मा की रचना नहीं करता। (इब्रा. 12:9)। छोटे बच्चे पाप के साथ जन्म नहीं लेते। वे इस पाप से भरे संसार में जन्म लेते हैं परन्तु पापी होकर जन्म नहीं लेते। ऐसी शिक्षा पर विश्वास न करें और छोटे बच्चों को बपतिस्मा न दें।

शैतान झूठी शिक्षाओं को फैलाने के लिये झूठे प्रचारकों का इस्तेमाल करता है। एक प्रचारक ने बच्चों के बपतिस्में की बात करते हुए कहा कि मैं मानता हूं यह गलत है लेकिन हमें अपनी कलीसिया के लिये ऐसा करना पड़ता है। क्योंकि उसकी नौकरी का सवाल है। बाइबल बड़े ही साफ़ तरीके से बताती है कि जो विश्वास करेगा और

बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा (मरकुस 16:16)। एक छोटा बच्चा कुछ भी नहीं जानता और न ही वह पापी है। कई प्रचारक यह जानते ही नहीं कि बपतिस्मा पापों को धोने के लिये है। (प्रेरितों 22:16)। यह एक मूर्खता की बात है कि बच्चे पाप से जन्म लेते हैं। एक बार एक प्रचारक ने कहा था कि हमारी कलीसिया के लोग जानते हैं कि बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये है परन्तु हम कलीसिया में इसे सिखा नहीं सकते। उसने कहा कि मैं खुद भी जानता हुं कि यह बात सही है परन्तु मै इसे सिखा नहीं सकता, क्योंकि मेरी नौकरी का सवाल है। यह बड़े ही दुख की बात है कि जो प्रचारक सत्य को जानते हैं वह उसे सिखा नही सकते। आज कई प्रचारक सत्य को जानते हुए भी इसे सिखा नही सकते।

हमें यह समझना चाहिए कि बाइबल हमारा अन्तिम अधिकार है। यीशु ने जो प्रेरितों और पतरस के साथ अधिकार बांधा था अब वह खुल गया है। परमेश्वर चाहता है कि हमारे पास जो बाइबल का अधिकार है उसे जाने। शैतान हमें झूठे प्रचारकों के चंगुल में फंसाता है परन्तु हमें बड़ी सावधानी बरतनी है। गलतिओं 1:8,9 को पढ़िये, प्रेरित पौलुस कहता है कि कुछ लोग मसीह की शिक्षा को बिगाड़ रहे हैं, बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें कई प्रचारक जानते हैं जो बाइबल के अनुसार गलत है फिर भी वे उन्हें छोड़ना नहीं चाहते।

आज बहुत से लोग बपतिस्में के विषय में अच्छी तरह से नहीं जानते। वे लोग इसके महत्व को नहीं समझते। इसलिये बहुत सारे ऐसा विचार रखते हैं कि बिना बपतिस्में के हमारा उद्धार हो सकता है। प्रेरित पौलूस ने कहा था, ''और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गये, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।'' (कुलु. 2:12)। बपतिस्में के विषय में बाइबल बहुत कुछ बताती है, परन्तु बाइबल में हम कहीं भी नहीं पढ़ते कि कभी भी किसी छोटे बच्चे का बपतिस्मा हुआ हो। रोमियों 6:3-4 में प्रेरित पौलुस हमें समझाता है कि बपतिस्मा लेना गाड़े जाना है यानि जल में गाड़े जाना। एक छोटा बच्चा इस बात को समझ नहीं सकता परन्तु फिर भी आज छोटे बच्चों को बपतिस्में के नाम पर छिड़काव कराया जाता है। बपतिस्में का अर्थ गाड़े जाना है और इसलिये खोजा और फिलिपुस दोनों जल में उतरे ताकि खोजा जल में गाडा जा सके। (प्रेरितो 8:39)।

एक और आवश्यक बात जो हम देखते हैं वो है बपतिस्में से पहिले बुराई से मन फिराया जाता है। (प्रेरितो 2:38)। एक छोटा बच्चा इस बात को कतई नहीं समझ सकता कि बुराई या मन फिराना क्या है। यदि आपने अभी तक बपतिस्मा नहीं लिया है तो इसके विषय में गमभीरता से विचार कीजिये। क्योंकि बिना बपतिस्मा लिये आप मसीह में नहीं आ सकते, क्योंकि मसीह में आने के लिये बपतिस्मा लेना आवश्यक है। बिना बपतिस्मे के हम उद्धार नहीं पा सकते। कई लोग सामप्रदायिक कलीसियाओं से आते हैं तथा कहते हैं कि हमने डूब का बपतिस्मा लिया हुआ है इसलिये मसीह की कलीसिया में आने के लिये हमें बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है। यह शिक्षा गलत है। मसीह की कलीसिया मसीह की देह है, और इसका अंग बनने के लियें सुसमाचार को मानकर बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

जीवन की कुछ महत्वपूर्ण सच्चाईयाँ

सनी डेविड

मित्रो, जब हम आत्मिक बातों पर ध्यान करते हैं, तो हम परमेश्वर पर ध्यान करते हैं। क्योंकि आत्मा का संबंध परमेश्वर से है। परमेश्वर वास्तव में, आत्मा है, इसलिये हम उसे परम-आत्मा कहकर सम्बोधित करते हैं। हम में से हर एक जन परमेश्वर के आत्मिक स्वरूप पर बना एक आत्मिक प्राणी है। इसलिये हम सब एक ही परमेश्वर की संतान हैं। हम सब का एक ही आत्मिक पिता है। और जब हम अपने आप को इस दृष्टिकोण से देखते हैं, तो हम स्वयं को वास्तव में बड़ा ही आशीषित अनुभव करते हैं–अर्थात् यह जानकर कि परम प्रधान परमेश्वर हमारा पिता है। उसी ने हम को जीवन दिया है, और पृथ्वी पर हमें भांति-भांति की आशीषों से परिपूर्ण किया है। स्वयं हमारा जीवन परमेश्वर की एक महान आशीष है। प्रत्येक सुबह और हर एक दिन परमेश्वर की आशीष है। तरह-तरह की भोजन वस्तुएं, पानी, और बदलते मौसम, ये सब वस्तुएं परमेश्वर की ही दी हुई आशीषें हैं। परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता। वह किसी को गरीब और किसी को अमीर पैदा नहीं करता। वह किसी को अपाहिज या किसी को तन्दरूस्त पैदा नहीं करता। उसके निकट सब मनुष्य एक समान हैं। जिस परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है, उसी ईश्वर ने पृथ्वी पर सब तरह के पशु-पक्षी और पेड़-पौधों को भी बनाया है- और उन्हें सक्षम किया है, कि वे अपनी ही तरह अन्य औरों को भी उत्पन्न कर सकते हैं। सो वे जहां भी हैं और जिस भी परिस्थिति में हैं, वे अपनी क्षमता अनुसार अपने ही प्रतिरूप पर औरों को उत्पन्न करते हैं।

अब जब हम विशेष रूप से मनुष्य पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि कुछ विशेष बातें ऐसी हैं जो सभी मनुष्यों के लिये एक समान हैं। और इन बातों में सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि हर एक इंसान जो पैदा हुआ है, वह एक दिन अवश्य मरेगा भी। चाहे कोई किसी भी परिस्थिति में क्यों न हो; अर्थात् गरीब हो या अमीर हो; तन्दरूस्त हो या बीमार हो; एक न एक दिन सभी का अंत होगा। और हम में से कोई भी यह नहीं जानता कि हमारा अन्त कब होगा। यानि हम सब का जीवन पृथ्वी पर अनिश्चित है।

पर जबकि हम सब आत्मिक प्राणी है। अर्थात् हमारा आत्मिक स्वरूप अमर है। परमेश्वर आत्मा है, और इसलिये वह सदा ही वर्तमान रहेगा। और ऐसे ही, प्रत्येक मनुष्य भी आत्मिक रूप से हमेशा बना रहेगा। आप की आत्मा का एक ऐसा अस्तित्व है जिसको कोई मिटा नहीं सकता। कभी-कभी लोग जीवन से तंग आकर ''आत्म-हत्या'' कर लेते हैं। वास्तव में वे अपने शरीर की या अपनी देह की हत्या करते हैं। क्योंकि आत्मा की हत्या तो कोई कर ही नहीं सकता। क्योंकि आत्मा एक ऐसी चीज है जो अमर है। जिसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं हो सकता। क्योंकि आत्मा परमेश्वर का स्वरूप है- जिस स्वरूप पर हम सब बनाए गए हैं। और जिस प्रकार परमेश्वर हमेशा रहेगा, उसी तरह

से हम सब भी जो पृथ्वी पर जन्मे हैं, हमेशा बने रहेंगे।

पर हम सब में एक और समानता है, और वह यह है कि हम सब पापी हैं। हम में से हर एक ने पाप किया है। जब से हम ने होश संभाला है; यानि जब से हम बचपन के दायरे से निकलकर समझदार हुए हैं, तब से लेकर आज तक हम सबने अनेकों पाप किए हैं। और स्वयं हमारा विवेक भी हमें दोषी ठहराता है, कि हम पापी है। और परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल में भी लिखा है, कि सब मनुष्यों ने पाप किया है, और इसलिये सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों 3:23)। परमेश्वर की महिमा से रहित होने का अभिप्राय इस बात से हैं, कि अपने पाप के कारण हर एक इंसान परमेश्वर से अलग है। और परमेश्वर से अलग होकर रहना ठीक ऐसा ही है, जैसा मछली का जल के बाहर रहना, और शरीर का प्राण के बिना रहना। जो कि असंभव है। क्योंकि मछली जल के बिना मर जाएगी; और ऐसे ही शरीर भी प्राण के बिना मर जाता है। सो मनुष्य का परमेश्वर से अलग होकर रहना, एक मरी हुई दशा में रहने के समान है।

इसलिये, हम सभी मनुष्यों को अपने पापों से छुटकारा पाने की आवश्यकता है। हम सब इंसानों को अपने पापों से मुक्ति और उद्धार प्राप्त करने की आवश्यकता है। और यह काम हम सब के लिये केवल परमेश्वर ही कर सकता है। केवल परमेश्वर ही हमें पापों से छुटकारा दिला सकता है। केवल परमेश्वर ही हमें पाप से मुक्त कर सकता है, और केवल वही पाप से हमारा उद्धार कर सकता है। और यह एक ऐसी खास बात है जिसे हम सब को समझने की बड़ी ही आवश्यकता है। क्योंकि अकसर हम सब इंसान ऐसा सोचते हैं, कि हम अपनी तरफ से कुछ करके या अपनी ओर से कुछ परमेश्वर को देकर उसे प्रसन्न कर सकते हैं, और बदले में वह हमारे अपराधों को क्षमा कर देगा। पर वास्तविकता ऐसी नहीं है। क्योंकि हमारे पास हमारा अपना क्या है, जिसे हम परमेश्वर को दे सकते हैं? क्या वास्तव में सब कुछ परमेश्वर का ही नहीं है? और क्या हम ऐसा कुछ कर सकते हैं, कि हम अपने कामों से अपने पापों पर परदा डाल लें या उन्हें ऐसा छिपा लें, कि हमारी बुराईयां परमेश्वर को दिखाई ही न दें?

वास्तव में, कोई भी इंसान स्वयं अपने कामों से, या अपनी इच्छा से कुछ करके या देकर, या अपने परिश्रम से अपने पापों से छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिये हम सभी को परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है। क्योंकि हम अपने-अपने प्रयत्नों से अपने आपको पाप से मुक्ति नहीं दिला सकते। केवल परमेश्वर ही पाप से हमारा उद्धार करके हमें पाप के दण्ड से मुक्त कर सकता है। लेकिन परमेश्वर अलग-अलग ढंग से या अलग-अलग रीतियों और उपायों से मनुष्य को पाप से मुक्ति नहीं देता। पर उसने सभी इंसानों के लिये पाप से मुक्ति पाने का एक साधन बनाया है। परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह; और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी। (1 यूहन्ना 2:1, 2)। यीशु मसीह को बाइबल में परमेश्वर का पुत्र कहकर सम्बोधित किया गया है। पर वास्तव में वह स्वयं ही परमेश्वरत्व में एक व्यक्तित्व है। जिसने अपनी ही इच्छा से परमेश्वरत्व को स्वर्ग में छोड़कर पृथ्वी

पर आकर मनुष्यत्व के कपड़े पहन लेने का निश्चय किया था। क्योंकि वह मनुष्य का पाप से उद्धार करना चाहता था। सो वह ईश्वर होकर भी एक इंसान बन गया था। पर वह पृथ्वी पर एक बड़ा विशाल कार्य करने को आया था। वह अपने आप को बलिदान करके सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को आया था। इसलिये बाइबल में लिखा है, कि वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। बाइबल में लिखा है, कि उसमें कोई पाप नहीं था, पर तौभी वह एक अपराधी की तरह सारे जगत के पापों के लिये क्रूस पर लटकाकर मारा गया था। और इस प्रकार परमेश्वर ने यीशु मसीह को सारे जगत के पापों का छुटकारा नियुक्त किया है। अर्थात, यीशु मसीह के भीतर हर एक इंसान अपने पापों से छुटकारा पाकर पाप से मुक्त हो सकता है। और पाप से छुटकारा पाकर फिर से परमेश्वर के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। और इस पृथ्वी पर इस आशा के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है, कि एक दिन जब वह यहां से हमेशा के लिये जाएगा, तो उसे परमेश्वर के स्वर्ग में रहने का एक स्थान मिलेगा। क्योंकि इस जगत से वह एक पापी की तरह नहीं पर एक धर्मी की तरह जाएगा। क्योंकि यीशु मसीह उसके पापों का प्रायश्चित है।

इसलिये यह बड़ा ही आवश्यक है, कि हर एक इंसान इस बात पर जरूर ध्यान दे, कि वह अपने सारे मन से यीशु मसीह में विश्वास लाए, और अपनी प्रत्येक बुराई से अपना मन फेरकर अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह की आज्ञा मानकर जल में बपतिस्मा ले। (यूहन्ना 3:16; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 8:35-39)।

प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि मार्ग, और जीवन और सच्चाई मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना 14:6)। यीशु मसीह परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया सारी मानवता का एक मुक्तिदाता है। और हम सब को उसके पास आने की आवश्यकता है।

कलीसिया की पहचान

जे. सी. चोट

यदि आपका कोई मित्र बहुत समय से खोया हुआ हो तो उसका पता लगाने के लिये आप क्या करेंगे? स्वभावत: उसे ढूंढ़ने से पहले आप उसकी पहचान के सब चिन्हों को एकत्रित करेंगे व फिर उसे ढूंढ़ना आरंभ करेंगे। मिल जाने पर केवल उसी व्यक्ति को जो पहचान के सभी चिन्हों से समानता रखता होगा, आप स्वीकार करेंगे अर्थात् जिसकी खोज आप कर रहे थे। इसी रीति से, संसार में बहुत सी कलीसियाएं हैं। कोई व्यक्ति यह किस प्रकार से जान सकता है कि कौन सी कलीसिया सही, व सच्ची है? कोई व्यक्ति कैसे जान सकता है कि मसीह की कलीसिया कौन सी है? वस्तुत: आप पहचान के सब चिन्हों को एकत्रित करें और तब विभिन्न कलीसियाओं

को उन से मिलाएं। जब आप उस एक कलीसिया का पता लगा लें जो पहचान के प्रत्येक चिन्ह से समानता रखती है, केवल तभी आप विश्वास के साथ कह सकेंगे कि आप को सही व सच्ची कलीसिया मिल गई है। परन्तु पहचान के चिन्ह क्या है? वे कहां मिल सकते हैं? इसका उत्तर हमें बाइबल में से मिलता है।

कलीसिया की पहचान के सभी सही चिन्ह बाइबल में मिलते है। इसलिये, इसके विषय में हम उसमें देख लें कि वे क्या हैं:

1. **मसीह ने कलीसिया को बनाया।** "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा : और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)।
2. **इसका आरंभ यरूशलेम में हुआ।** यह लूका 24:45-49 और प्रेरितों 2 अध्याय से स्पष्ट है।
3. **इसकी स्थापना लगभग 33 ई. स. में हुई,** पिन्तेकुस्त के दिन और इसका ज्ञान भी प्रेरितों 2 अध्याय से होता है।
4. **कलीसिया ने मसीह का नाम धारण किया।** अनेक मंडलियों का उल्लेख करते हुए, पौलुस ने लिखा, "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों 16:16)। तथा कुरिन्थुस में कलीसिया से उसने कहा, "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।" (1 कुरिन्थियों 12:27)। परन्तु देह क्या है? कलीसिया। (इफिसियों 1:22, 23)।
5. **इसके सदस्य मसीही कहलाए।** "और चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।" (प्रेरितों 11:26)। "तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?" (प्रेरितों 26:28)। "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।" (1 पतरस 4:16)। अत: स्मरण रहे, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों 4:12)।
6. **केवल मसीह ही इसका सिर है।** "और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" (कुलुस्सियों 1:18)।
7. **केवल एक ही है।** "एक ही देह है, और एक आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।" (इफिसियों 4:4)। किन्तु देह क्या है? यह कलीसिया है। (कुलुस्सियों 1:18)। इसलिये, जबकि एक ही देह है, और देह कलीसिया है, तब केवल एक ही कलीसिया है।
8. **कलीसिया में प्रवेश पाने के कुछ विशेष नियम है।** अर्थात् विश्वास (इब्रानियों 11:6), मन फिराना (प्रेरितों 17:30), विश्वास का अंगीकार करना (रोमियों 10, 9, 10), और बपतिस्मा। (मरकुस 16:16)। जिस व्यक्ति का उद्धार होता है उसे प्रभु यीशु कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों 2:47)। इसी प्रकार से रोमियों 6:3, 4 व गलातियों 3:26, 27 और 1 कुरिन्थियों 12:13 से भी यही शिक्षा मिलती है कि विश्वासी जन मसीह और उसकी कलीसिया में एक होने के

लिये बपतिस्मा लेते है। इन आज्ञाओं को मानने के द्वारा मनुष्य का जन्म कलीसिया अर्थात् राज्य में होता है। (यूहन्ना 3:3-5)।

9. **कलीसिया की उपासना विशेष है।** सब मसीही सप्ताह के पहले दिन एकत्रित होते हैं (प्रेरितों 20:7), गाने के लिये (इफिसियों 5:19), प्रार्थना करने के लिये (प्रेरितों 2:42), परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिये (2 तीमुथियुस 2:15), प्रभु भोज में भाग लेने के लिये (1 कुरिन्थियों 11), और चंदा देने के लिये (1 कुरिन्थियों 16:2)।
10. **कलीसिया की शिक्षा केवल बाइबल पर ही आधारित है।** किसी को भी यह अधिकार नहीं दिया गया कि वह बाइबल में कुछ भी बढ़ाए, या उसमें से कुछ भी निकाले या उसे बदले। (प्रकाशितवाक्य 22: 18, 19; गलतियों 1: 6-11)। केवल बाइबल ही कलीसिया का एकमात्र धर्मसार है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी पुस्तकें व धर्मसार अस्वीकृत है।
11. **कलीसिया का संगठन निश्चय ही परमेश्वर की कही गई योजना के अनुसार होना चाहिए।** मसीह कलीसिया का सिर है (इफिसियों 5:23) और प्रत्येक मंडली में उसके अपने अध्यक्ष व सेवक होने चाहिए। (1 तीमुथियुस और 3 तीतुस 1)। पृथ्वी पर प्रभु की कलीसिया का न तो कोई प्रधान है न कोई प्रधान कार्यालय और न ही इसका कोई राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मनुष्य द्वारा बनाया हुआ संगठन है।
12. **कलीसिया का उद्देश्य तीन प्रकार के कार्य करना है।** अर्थात् सुसमाचार प्रचार करना (मरकुस 16:15, 16), दीनों की सहायता करना (गलातियों 6; याकूब 2), और सदस्यों की आत्मिक उन्नति के लिये कार्य करना (इब्रानियों 3:12-14)।
13. **प्रत्येक मसीही को चाहिए कि वह भक्तिपूर्ण मसीही जीवन निर्वाह करे।** वह संसार से प्रेम नहीं कर सकता (1 यूहन्ना 2:15; याकूब 4:4), इसके विपरीत उसमें आत्मिक फल होने चाहिए (गलातियों 5:22, 23)। जीवन का मुकुट केवल वही प्राप्त करेगा जो प्राण देने तक विश्वासी रहेगा (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

कलीसिया की पहचान के यह कुछ चिन्ह हैं। इन के विषय में हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए आदर्श अर्थात् बाइबल से ज्ञात होता है। अब, जिस कलीसिया के सदस्य आप है उसकी तुलना इनसे कीजिए। उदाहरणार्थ, आरंभ के चार चिन्हों को ले लें। अपने आप से पूछें, जिस कलीसिया में मैं हूं "उसे किस ने बनाया?" क्या उसे मसीह ने स्थापित किया या किसी मनुष्य ने? तब पूछें, "इस कलीसिया की स्थापना कहां पर हुई थी?" क्या इसका आरंभ यरूशलेम में हुआ था या किसी अन्य स्थान पर? फिर पूछें, "इस कलीसिया की स्थापना कब हुई थी?" यदि इसकी स्थापना 33 ई. स. के बाद में हुई है तब यह प्रभु की कलीसिया नहीं हो सकती। और अंत में, स्वयं से पूछें, "इस कलीसिया का नाम क्या है?" यदि यह मसीह का नाम भी अपने ऊपर नहीं रखती, तब यह मसीह की कैसे हो सकती है? इसी प्रकार के अन्य प्रश्न भी आप पूछ सकते हैं, परन्तु यह निर्णय करने के लिये कि जिस कलीसिया में आप है वह प्रभु की है या किसी मनुष्य

की यही पर्याप्त है। इसी प्रकार से अन्य कलीसियाओं की तुलना भी आप इन पहचान के चिन्हों से कर सकते हैं, यह निश्चय करने के लिये कि वे परमेश्वर की है या मनुष्यों की। मेरा विश्वास है कि आप अंतर देख सकेंगे यदि आप अपने आप से ईमानदार है।

यदि आप जान लेते हैं कि जिस कलीसिया के आप सदस्य है वह बाइबल की एक व सच्ची कलीसिया नहीं है; तब आप से मेरा यह आग्रह है कि आप उसे त्याग दें, सत्य को सीखें, उसे मानें, ताकि प्रभु आपको उस कलीसिया में मिलाए जिसके विषय में आप परमेश्वर के वचन में पढ़ते हैं। तब आप उस एक कलीसिया के सदस्य होंगे जिसमें सब उद्धार पाए हुए मिलाए जाते हैं।

आत्मिक युद्ध के हथियार (इफि. 6:10-19)

डॉ. एफ. आर. साहू

परमेश्वर के प्रबंध हेतु आत्मिक युद्ध के छः महत्वपूर्ण हथियार के विषय में हम अध्ययन करेंगे। आईये देखें यह हथियार क्या है?

पौलूस प्रेरित यहां पर परमेश्वर की शक्ति और सुरक्षा को रोमी सिपाहियों द्वारा पहने जाने वाले हथियारों के अर्थ को दिखाता है और मसीह आत्मिक युद्ध का वर्णन करते हुए उसने सिपाहियों के पूरी तरह से युद्ध के अस्त्र अर्थात कवच पहने जाने वाली पोषाकों से सुसज्जीत सिपाहियों की ओर संकेत करते हुए मसीही व्यक्ति के लिये परमेश्वर के सारे हथियार पहनने के विषय में बताया है।

हमको मालूम होना चाहिये कि परमेश्वर ने हमको मसीह में सेवक सैनिक की तरह आत्मिक युद्ध के हथियारों के उन संसाधनों से लैस किया है जो शत्रु को हराने और परमेश्वर के राज्य के लिये महान विजय को प्राप्त करने के लिये जरूरी है।

इसलिये पौलूस प्रेरित कहता है वचन 13 पद में ''इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बांध लों कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।'' इसलिये मसीही सेवक सैनिकों को भी अपनी अपनी आत्मिक देह की रक्षा के लिये परमेश्वर के सम्पूर्ण हथियारों को बांधना या धारण करना जरूरी है।

अब हम जानेगे कि परमेश्वर के सम्पूर्ण हथियार क्या है? 1. सत्य की कमर बंध। 2. धार्मिकता की झिलम। 3. सुसमाचार की तैयारी के जूतें। 4. विश्वास की ढाल। 5. उद्धार का टोप। 6. आत्मा की तलवार।

और जैसे वचन 10 में लिखा है, ''प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवंत बनों।'' प्रियों अभी हमको अपने शक्तिशाली शत्रुओं का सामना करना है इसलिये हमें आत्मिकता में मजबूत बने रहना होगा। और वह सामर्थ इफि. 3:16 के अनुसार जो हमारे प्रभु की ओर से हमें मिला है, जो हमारे भीतरी मनुष्यत्व में है उस सामर्थ को ढूंढना जरूरी है।

वचन 11-12 के अनुसार हर एक मसीही व्यक्ति को परमेश्वर के सारे हथियार जो प्रतिरक्षात्मक के निमित उपयोग में लाना है उसे पूर्ण रूप से धारण कर प्रभु की शक्ति में मजबूत बने रहना है।

परमेश्वर के सारे हथियार बांधने का असली कारण यह है कि शैतान की हर युक्ति के आगे हम खड़े रह सकें, क्योंकि शैतान की युक्ति हमेशा हमें परीक्षा में डालने के लिये होती है और हमारे विश्वास को कमजोर करने के लिये हो सकती है।

जैसे यहां लिखा है, ''क्योंकि हमारा मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है।''

ऐसा देखा जाता है कि मल्लयुद्ध में मुकाबले के लिये बहुत ही करीब से लड़ाई होती है। इसी तरह से एक मसीही व्यक्ति की लड़ाई अपने शत्रु के साथ बहुत ही निकटता से होती है। और वह लड़ाई जिसमें मसीही लोगों को आत्मिक क्षेत्र में हर प्रकार की बुराईयों और निन्दाओं का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि शैतान हमें सुसमाचार के विरूद्ध चलाने की युक्ति कर सकता है इसलिये मसीही व्यक्ति को संसार और शैतान से जय पानी है इसलिये आत्मिक्ता के सारे हथियारों को पहनना जरूरी है। क्योंकि दुष्टता की आत्मिक सेनाएं जो आकाश में है बहुत ही शक्तिशाली है। और उसके क्षेत्र को ही अंधकार का क्षेत्र कहा गया है। क्योंकि अंधकार का क्षेत्र और उनके अपने हथकण्डे विशेष कर आत्माओं को धोखा देना और उस पर कब्जा करना होता है जो विशेषकर आराधनालयों में झूठे सेवकों और झूठे शिक्षकों और झूठे प्रचारकों के बीच में हो सकता है। इसलिये हर मनुष्यों को अंधकार के उस क्षेत्र से हटकर परमेश्वर की ओर फिरना चाहिये। और जैसे कि वचन 13 हमें बताती है कि ''इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम बुरे दिन का सामना कर सको।'' क्योंकि प्रियों स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिये मसीहीयत का ये भाग बहूमूल्य अवसर है इसलिये बुद्धिमानों के समान बड़े ही सावधानी से चलें। वचन हमें बताता है, ''इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो: निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो क्योंकि दिन बुरे हैं। इस कारण निर्बुद्ध न हो, पर ध्यान से समझों कि प्रभु की इच्छा क्या है।'' (इफि. 15,16)।

1. आत्मिक युद्ध के हथियारों में पहला हथियार क्या है? जैसे वचन 14 में लिखा है, **''सत्य से अपनी कमर कस कर''** अर्थात आध्यात्मिक युद्ध का पहला हथियार है **''सत्य का कमर बंध''** जैसे एक सिपाही अपनी कमर को कसने के लिये बेल्ट का इस्तेमाल करता है।

कमर का कसना चूंकि आत्मिक युद्ध में मसीही व्यक्ति को हथियारों से लेस होने की आवश्यकता को दर्शाता है। प्रतिकात्मक भाव से कहे तो सत्य का कमर बंध मसीहियत में निष्कपट ईमानदारी और सच्चाई के व्यक्तिगत अनुग्रह को दर्शाता है।

अर्थात एक मसीही व्यक्ति को अपने जीवन में सच्चाई और खराई के साथ बने रहना है। प्रियों एक मसीही योद्धा को सबसे पहले परमेश्वर के वचन की सच्चाई और व्यक्तिगत ईमानदारी के साथ कमर कसनी है। और परमेश्वर की पहचान के विरोध में हमारे जीवन में उठने वाली हर बुराईयों का खण्डन करते रहना है, जैसे 2 कुरि. 10:1-3

तक हमें बताती है। और यह ध्यान रखना होगा कि यदि शैतान हमारी सोच को अपनी सोच में ढाल दे तो हम युद्ध हार भी सकते हैं। इसलिये हमें अपनी-अपनी बुद्धि की कमर बांध लेनी चाहिये। जैसे लिखा है, ''इसलिये अपनी-अपनी बुद्धि की कमर बांधकर और सचेत रहकर, उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो जो यीशु मसीह के प्रकट होने के समय तुम्हें मिलने वाला है।'' (1 पत. 1:13)।

2. अब हम देखेंगे कि आत्मिक युद्ध का दूसरा हथियार क्या है? आत्मिक युद्ध का दूसरा हथियार है- **धार्मिकता की झिलम।** जैसे लिखा है- **''धार्मिकता की झिलम पहिन कर''** झिलम वह सुरक्षा कवच होता है जिसमें सिपाहियों के सम्पूर्ण छाती चेस्ट की रक्षा होती है। चूंकि यह बात मसीहीयों की हृदय और मन की रक्षा धार्मिकता के वस्त्र को दर्शाती है। अर्थात जब कोई व्यक्ति मसीह में बपतिस्मा लेता है तो वह मसीह को पहन लेता है। (गलाति. 3:27)। और तब से वह व्यक्ति धार्मिकता का दास बन जाता है। (रोमि. 6:18)। यह वही धार्मिकता है जो सुसमाचार में बताई गई है जिसे आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा ग्रहण किया जाना आवश्यक है, अर्थात जब कोई व्यक्ति आज्ञाकारी विश्वास से मान लेता है तो उसे परमेश्वर की ओर से धार्मिकता के रूप में देखा जाएगा। अर्थात धार्मिकता का झिलम उन लोगों के लिए है जिनके पाप क्षमा हो चुके है और परमेश्वर के साथ उनका संबंध सही हो चुका है। इसलिये मसीही व्यक्ति के लिए हथियार के रूप में पौलूस द्वारा बताई गई धार्मिकता यह स्मरण कराने के लिए है कि परमेश्वर न्याय करने में धर्मी और सच्चे है। और सही काम करने का गुण मसीह योद्धा के लिए धार्मिकता का झिलम आत्मिक सुरक्षा का महत्वपूर्ण भाग है।

3. आत्मिक युद्ध का तीसरा हथियार है- पावों में मेल के सुसमाचार की तैयारी की जूते जैसे वचन 15 में लिखा है, **''पावों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिनकर''**। और इस बात की गूंज यशायाह 52:7 में मिलती है जिसमें कहा गया है, ''उसके पांव क्या ही सुहावने है जो शुभ समाचार लाता है, जो शांति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का संदेश देता है।'' और जैसे लिखा है, ''उनके पांव क्या ही सूहावने है जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते है।'' (रोमि. 10:15)। यहां पर पौलूस ने पांवो को प्रचार के बजाय तैयारी के साथ जोड़ा है जैसे सिपाही को युद्ध में सफल होने के लिये सही जूते होने आवश्यक है। जोसेफस ने यरूशलेम में एक रोमी सिपाही के बारे में बताया जिसके जूते मोटी और तीखी और कीलों से भरे थे। चूंकि सुसमाचार शांति या मेल का संदेश है और मसीह सिपाही को शैतान के हर हमलें का सामना करने के लिए तैयार रहना है क्योंकि मेल का सुसमाचार उसे ऐसा करने के लिए तैयार करता है। सुसमाचार आंतरिक शांति के लिए हमारे संबंध को परमेश्वर के साथ जोड़ने वाला यथार्थ है। (इफि. 2:14)।

4. मसीही आत्मिक युद्ध का चौथा हथियार है- **विश्वास की ढाल।** ढाल वह महत्वपूर्ण हथियार है जिससे शत्रुओं के आक्रमणकारी वारों को रोका जाता है। और इसका असली प्रतिकात्मक भाव है कि एक मसीही को विश्वास के द्वारा जीना और केवल परमेश्वर पर और उसके वचनों पर पूरा भरोसा रखने की बातों को दर्शाता है। इस

भाव को और बेहतर समझने के लिए रोमि. 4:18-21 तक और फिलि. 1:20,21 पढ़ सकते हैं।

और सच्चा विश्वास सुसमाचार की सच्चाई पर यकीन करना परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और उसके सामर्थ में भरोसा रखना और प्रभु की आज्ञाओं को मानना होता है, जैसे कि इफि. 1:13,15,16 बताती है। चूंकि विश्वास का यह स्तर मसीही व्यक्ति के पूरे अस्तित्व की रक्षा करता है। (रोमि. 1:17)।

सो प्रियों, मसीही व्यक्ति के लिए उस दुष्ट अर्थात शैतान के जलते हुए तीरों को बुझा सकने के लिए ऐसा कवच अर्थात विश्वास की ढाल का इस्तेमाल करना जरूरी है।

5. आयत 17 के अनुसार आध्यात्मिक युद्ध का पांचवा हथियार है- **''उद्धार का टोप''**। जैसे सिपाही के टोप के तीरों से सिर का बचाव होता है। चूंकि टोप मसीहीयों के लिए वह सुरक्षा कवॅच है, जिससे शैतान अपने आक्रमक शक्ति के प्रभाव से मसीही व्यक्ति को संदेह और निराशा जैसे प्रभावकारी प्रहारों से बचने या आत्मिक मृत्यु के कारण के लिए इस्तेमाल कर सकता है। इसलिये धार्मिकता की झिलम को पहनने के साथ-साथ उद्धार का टोप भी बहुत जरूरी है? (यशा. 59:17)।

6. आध्यात्मिक युद्ध का छटवां हथियार क्या है? जैसे लिखा है- **''आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है ले लो''** अर्थात आत्मिक युद्ध का छटवां महत्वपूर्ण हथियार है आत्मा की तलवार अर्थात परमेश्वर का वचन।

प्रियों, मसीही आत्मिक सुरक्षा कवॅच में आक्रमण का महत्वपूर्ण हथियार है तो वह है ''परमेश्वर का वचन''। चूंकि एक मसीही सेवक सैनिक को अपने इलाके के बचाव में न केवल अपनी जमीन पर खड़े रहना है बल्कि उसे आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है लेकर मसीह के कामों के लिए आगे बढ़ना भी आवश्यक है।

शैतान के द्वारा बहुत से आत्मिक छल और दोषारोपण की मुकाबला करने की शक्ति केवल परमेश्वर के वचन में हैं। एक अच्छे उदाहरण के लिये मत्ती 4:1-11 में मुख्य वचन 3,7,9 में इबलिश नामक शैतान यीशु को कैसे परखता है, लेकिन प्रभु यीशु ने शैतान को किसी भौतिक हथियारों से नहीं पर परमेश्वर के वचनों से कैसे निरूत्तर कर देता है और शैतान को उसके सामने से हटना पड़ता है।

प्रियों, हमें अपने शत्रु को कभी भी कमजोर नहीं समझना चाहिये। वह आत्मघाति और विश्वासघाति होता है। इस लिये आध्यात्मिक युद्ध में विजय पाने के लिये आत्मा में जागरूक होने की आवश्यकता है। 1 पत. 5:8 हमें बताती है कि ''सचेत हो और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाएं।''

परमेश्वर के सारे हथियार जिसके विषय में हमने देखा बांध लेने पर भी विशेषकर मसीही लोगों को परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर रहना भी आवश्यक है जैसे दाउद जब बालक ही था वह अपनी शारीरिक प्रतिकुलता के कारण किसी भी भैतिक हथियार को लेकर चल नहीं सकता था परन्तु वह जानता था कि शारीरिक युद्ध की अपेक्षा आध्यात्मिक युद्ध अधिक कठीन होता है। उसका छुटकारा उत्कृष्ट किसी भी भौतिक

हथियारों से नहीं हो सकता वरन परमेश्वर पर और उसकी सामर्थ पर विश्वास और भरोसे से होगा। और यही सोचकर दाउद परमेश्वर का नाम लेकर आगे बढ़ता है और पलिश्ती योद्धा गोलियत को मार गिराता है। (1 शमूएल 17 अध्याय)।

हमें परमेश्वर की सामर्थ पर भी भरोसा रखना चाहिये। और परमेश्वर की सामर्थ हमें प्रार्थना के द्वारा ही मिल पाना सम्भव हो सकता है। पवित्र बाइबल हमें बताती है कि ''हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और विनती करते रहो।'' यह हमें यह भी बताती है कि मसीह यीशु के द्वारा युद्ध जीत लिया गया है और उसके द्वारा ही हमें भी जयवंत करता है इसलिये हमें केवल मसीह यीशु में बने रहना होगा। क्योंकि कोई क्यों न हो मसीह यीशु के बिना आत्मिक युद्ध में जयवंत नहीं हो सकता? बाइबल हमें यह भी बताती है कि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर लें परन्तु अपने प्राण (आत्मा) की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? (मती 16:26)।

इसलिये जो कोई अपनी आत्मा की सलामती चाहता है वह इसी जीवन के रहते ही अपने पापों से मन फिराकर प्रभु यीशु के पास आएं और यीशु में विश्वास लाकर अपने पापों को धो डालें। (प्रेरितों 22:16)।

आपने सुना होगा

जॉन स्टेसी

कुछ लोगों को आपने यह कहते भी सुना होगा कि लोगों का उद्धार केवल तभी होता है जब पवित्रात्मा उनके मन में कुछ विशेष काम करता है। यह तो ठीक है, कि पवित्रात्मा की सामर्थ के बिना किसी भी मनुष्य का उद्धार नहीं हो सकता। पर बात देखने की यह है, कि मनुष्य के उद्धार में पवित्र आत्मा किस प्रकार से कार्य करता है।

कुछ लोगों का ऐसा मत है कि प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही पापी है, इसलिये वह स्वयं अपने उद्धार के लिये कुछ भी नहीं कर सकता, पर आश्चर्यजनक रूप से परमेश्वर का आत्मा जिस व्यक्ति के भीतर काम करता है, केवल वही व्यक्ति उद्धार पाएगा। दूसरी ओर, बाइबल हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर के वचन के प्रचार के द्वारा लोग बचाए जाते हैं। जब लोग परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर विश्वास लाकर परमेश्वर के वचन की बातें मानते हैं केवल तभी उनका उद्धार होता है। याकूब 1:18 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, परमेश्वर का सत्य वचन ही वह बीज है जो मनुष्यों के मनों में बोया जाता है, और जिसके द्वारा मनुष्य का आत्मिक जन्म होता है। इसी अध्याय की इक्कीसवीं आयत में याकूब कहता है कि उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है। अब यह वचन हृदयों में किस प्रकार बोया जाता है? पौलुस कहता है, 1 कुरिन्थियों 1:21 में कि परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे। सो वचन का प्रचार करके

वचन को हृदयों में बोया जाता है। यही बात हम कुरनेलियुस, पर पवित्र आत्मा उतरा था, की घटना में भी देखते हैं। प्रेरितों 11:14 के अनुसार, परमेश्वर ने कुरनेलियुस से कहा था कि वह पतरस को अपने यहां बुलवा ले क्योंकि, वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।

अब यदि वचन का प्रचार किए बिना, पवित्र आत्मा स्वयं ही लोगों के मनों में कार्य करके उनका उद्धार करता है, तो फिर कुरनेलियुस को वचन सुनने की कोई आवश्यकता नहीं थी, और यदि ऐसा वास्तव में होता तो फिर परमेश्वर तो पक्षपाती बन जाता तथा जिस पर चाहता उस पर पवित्रात्मा भेजकर उसका उद्धार कर देता और बाकी लोगों को छोड़ देता। और फिर यदि ऐसा होता तो परमेश्वर के वचन के द्वारा हम सब का न्याय किस प्रकार होगा? यदि परमेश्वर का पवित्र आत्मा ही मनुष्य में आकर स्वयं उनका उद्धार करता है, तो फिर वचन का प्रचार ही क्यों किया जाए? रोमियों 1:16 में पौलुस ने कहा था कि मैं सुसमाचार (को प्रचार करने) से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।

परमेश्वर के लेपालक पुत्र

जे. लॉकहर्ट

जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उसमें चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत मेंत दिया

विद्वान इस बात पर एकमत नहीं है कि प्रेम में आयत 4 में उसके निकट के साथ जोड़ा जाए या आयत 5 में उस ने हमें पहले से ठहराया के साथ। यदि यह पहले वाले भाग से जुड़ा है तो चुने जाने का कार्य और वह बात जो ध्यान में थी अर्थात हमारी पवित्रता और निर्दोषता, दोनों ही परमेश्वर के प्रेम के कारण थीं और इस में उनकी व्याख्या थीं। परन्तु यह भी सच है कि हमें पहले से ठहराने के परमेश्वर के कार्य को प्रेरणा ईश्वरीय प्रेम से मिली थी।

आर.सी.एच. लैंस ने इस विचार को माना कि प्रेम में आयत 4 का भाग है, क्योंकि इसका इस्तेमाल हमारे प्रेम के संबंध में किया गया है। ताकि पवित्र और निर्दोष उन पवित्र लोगों के लिए है, जिन्हें प्रेम से प्रेरणा मिली है। परन्तु पवित्र और निर्दोष का अधिक संबंध मसीह में हमारी स्थिति से और परमेश्वर के हमें मसीह में देखने के ढंग से है। इसमें प्रेम में मसीही लोगों के स्वभाव की नहीं, बल्कि पहले स्थान पर मसीह में होने की अनुमति देने वाले परमेश्वर के प्रेम की बात है। हमें आयत 4 में प्रेम में का अर्थ यह समझाने के लिए करना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें अपनी संतान होने के लिए क्यों ठहराया।

संसार के आरंभ से पहले परमेश्वर ने कुछ ऐसा ठहरा दिया, जो इतिहास में होना

था। उसने पहल करके हमें (पहले से ठहराया मसीह में पवित्र लोग और विश्वासी) ताकि हम उसके लेपालक पुत्र हों। क्रिया शब्द पौलुस के लेखों में पांच बार मिलता है। (रोमियों 8:29, 30; 1 कुरिन्थियों 2:7; इफिसियों 1:5, 11) और इसका इस्तेमाल अनन्तकाल से ठहराने वाले के रूप में परमेश्वर के लिए ही हुआ है, या जैसा कि यहां है, किसी को किसी बात के लिए पहले से ठहराना। लेपालक पुत्र वह अधिकार है, जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से ठहरा दिया है। इस तथ्य को कि विश्वासी लोग परमेश्वर की संतान (या पुत्र) हैं चाहे पवित्र शास्त्र में आमतौर पर व्यक्त किया गया है, परन्तु लेपालकपन के विचार को केवल पौलुस ने इस्तेमाल किया। लेपालक के लिए यूनानी शब्द नये नियम में पांच बार मिलता है, जिस में एक बार परमेश्वर के साथ इस्राएल के विशेष संबंध के लिए (रोमियों 9:4); तीन बार विश्वासियों की वर्तमान स्थिति के हवाले से (रोमियों 8:15; गलातियों 4:5; इफिसियों 1:5); और एक बार मसीह के आगमन पर भविष्य के पुनरुत्थान के संबंध में, जब पुत्र होने का पूरा प्रदर्शन हो जाएगा (रोमियों 8:23)।

गोद लेने के पुराने नियम के उदाहरण बहुत थोड़े हैं, जिनमें केवल तीन मामलों का उल्लेख है। ये तीनों मामले फलस्तीन के बाहर हुए मूसा (निर्गमन 2:10), गनूबत (1 राजाओं 11:20) और एस्तेर (एस्तेर 2:7, 15)। एस.डी.एफ. सैलमण्ड का अवलोकन है, किसी बच्चे के किसी ऐसे परिवार ने कानूनी हस्तांतरण के अर्थ में जिसमें उसने जन्म न लिया हो, गोद लेने का यहूदी व्यवस्था में कोई स्थान नहीं था।

परन्तु यूनानी और रोमी लोगों में गोद लेने की बात आम थी। रोमी कानून में.... एक कार्यवाही के लिए प्रावधान था, जिसमें किसी बच्चे को जो जन्म के द्वारा पुत्र न हो, पुत्र बनाने की बात हो, अर्थात् किसी पुत्र का जो मुक्त हो, जैसा कि उसके असली पिता की मृत्यु हो जाने पर, लोगों के सार्वजनिक कार्य के द्वारा किसी दूसरे पिता को हस्तांतरण। इस प्रकार रोमी लोगों में कोई नागरिक किसी बच्चे को जो उसके परिवार में जन्म के द्वारा उसका न हो लेकर उससे अपना नाम पा सकता था, परन्तु ऐसा वह केवल गवाहों की पुष्टि के द्वारा एक औपचारिक कार्य के द्वारा ही कर सकता था, और इस प्रकार से गोद लिए हुए पुत्र को उन सभी अधिकारों और सभी दायित्यों को जो उसमें हों जन्म के द्वारा संतान के पूरे अधिकार मिलते थे।

यूनानी भाषा के उपयोग और रोमी कानून के अनुसार गोद लिए जाने पर दास की तरह ही वह अपने पिता की सम्पत्ति बन जाता था। उसे परिवार में जन्म लेने वाले पुत्र की तरह देखा जाता था और वह अपने पहले परिवार के लिए मर जाता था। हम यह मान लेते हैं कि पौलुस अपने संसार के रीति-रिवाजों से परिचित था और पवित्र आत्मा की अगुआई से उसने परमेश्वर के साथ इफिसियों के संबंध की बात करने के लिए गोद लिए जाने की अवधारणा का इस्तेमाल किया।

पौलुस ने कहा था कि परमेश्वर ने हमें इसलिए ठहराया कि, हम उसके लेपालक पुत्र हों। जो उस मंशा का संकेत देता है, जिसके लिए परमेश्वर ने हमें पहले से ठहराया। इस प्रकार से, पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोग चुने हुए और यीशु मसीह के

द्वारा पुत्र होने के लिए ठहराए हुए बन गए। कैनथ एस. वुएस्ट का अवलोकन है कि यूनानी संज्ञा शब्द (रखना) और (एक वयस्क पुत्र) से किया गया है, सो परमेश्वर का इरादा वयस्क पुत्रों को रखना था, उन्हें संतान की कानूनी स्थिति (प्रतिदिन की आवश्यकताओं को देखते हुए) और वयस्क पुत्रों के कानूनी अधिकार देना था (मीरास देते हुए)।

अन्य आयतें, जो अपनी संतान के लिए परमेश्वर की मंशा पर गोद लेने पर अतिरिक्त प्रकाश डालती है। (1) गलातियों 4:4-7 में पौलुस ने गोद लिए जाने को उनके संबंध में लिखा जो व्यवस्था के दास थे (इसे पूरा न कर पाने की उनकी अयोग्यता के कारण)। उस संदर्भ में उस ने गोद लिए जाने को दासता से छुड़ाए जाने को मिलाया। और छुड़ा लिया है जिसका अर्थ है, गुलामों की मण्डी में से खरीदना। यह आयत इस बात को समझा देती है कि गोद लिया जाना इस कारण संभव हुआ, क्योंकि मसीह की मृत्यु से उन्हें जो पाप में थे, पाप के बंधन से छुड़ाने के लिए कीमत चुकाई गई (देखें यूहन्ना 8:34; रोमियों 6:17, 18; 1 पतरस 1:18, 19)। (2) रोमियों 8:15 सुझाव देता है कि परमेश्वर के लेपालक पुत्रों को दासता में से मानवीय स्वभाव में से मुक्त कर दिया गया है। जिन्हें मुक्त किया गया है वे परमेश्वर के वारिस हैं और मसीह के साथ संगी वारिस हैं। एक दिन इन संगी वारिसों को उसके साथ महिमा दी जाएगी। (3) रोमियों 8:23 में लेपालक को उस आशा से जोड़ा गया है, जो मसीही व्यक्ति को मुर्दों में से जी उठने की है। पहले से ठहराए जाने का, जिसकी बात पौलुस ने की, संबंध परमेश्वर की संतान के रूप में हमारा आत्मिक आशिषों को प्राप्त करने से है। जिन्हें परमेश्वर के परिवार में गोद लिया गया है, उन्हें उसके पुत्र के स्वरूप में ढलने के उच्च लक्ष्य को पाने के लिए कहा जाता है (रोमियों 8:29)।

इसका अर्थ यह हुआ कि लेपालकपन या गोद लिए जाने का विचार हमें याद दिलाता है कि हम पाप के दास थे, परतु हमें मसीह के लहू के द्वारा गुलामों की मण्डी में से खरीद लिया गया है। हम अपने पहले मालिक या माता-पिता के लिए मर गए (देखें 6:1-4) और अब धार्मिकता के दास हैं (रोमियों 6:17, 18)। हमें परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं होने (रोमियों 8:17) का अधिकार और आशिषें मिली हैं जो परमेश्वर के इकलौते पुत्र यीशु से हैं।

जो लोग मसीह में हैं, उन्हें अपने वयस्क संतान बनाने का परमेश्वर का कार्य यीशु मसीह के द्वारा प्रभावी हुआ। क्रूस पर मसीह का काम ही वह मध्यस्थ था, जिस के द्वारा पापियों को अपने परिवार में गोद लेने का परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हुआ था (देखें गलातियों 4:4-7)।

अपने लिए शब्द परमेश्वर के लिए हैं, जिसने उन्हें जो मसीह में है अपने बनाने के लिए पहले से ठहराया।

उसने पहले से अपने लिए वयस्क पुत्रों के रूप में हमें ठहराने के उद्देश्य से, अपनी ही संतुष्टि के चिन्हित कर लिया था, ताकि वह हमें अपने पुत्रों वाला प्रेम दे सके, ताकि वह हमें पुत्र होने के उच्च अधिकार को और उसके साथ संगति को दे सके, ताकि वह

हमारा उद्धार करने और हमारी आराधना और सेवा को ग्रहण करने में महिमा पा सके।

'के लिए' शब्द से पता चलता है कि परमेश्वर स्वयं उस सब का लक्ष्य है जो उस ने किया है।

अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार कुछ मुद्रणों में भले अभिप्राय का अनुवाद शुभ इच्छा किया गया है। ऐसी उस की इच्छा और चाह थी, जबकि यह उसकी इच्छा और चाह से मेल खाती है। इस वाक्यांश को क्योंकि उसने चाहा किया गया है। अनुवादित संज्ञा मति अलग-अलग रूपों में सुसमाचार के विवरणों में तीन बार (मत्ती 11:26; लूका 2:14; 10:21), पौलुस के लेखों में छह बार (रोमियों 10:1; इफिसियों 1:5, 9; फिलिप्पियों 1:15; 2:13; 2 थिस्सलुनीकियों 1:11) मिलता है, परन्तु और कहीं नहीं मिलता। मैरविन आर विंसटन ने टिप्पणी की है कि यहां इस शब्द का इस्तेमाल दयालुता या मित्रतापूर्वक भावना के अर्थ में कठोर रूप में नहीं (जैसा कि लूका 2:14 और फिलिप्पियों 1:15) परन्तु क्योंकि उसे अच्छा लगा (देखें मत्ती 11:26 और लूका 10:21) के कारण है। परन्तु और अर्थ प्रेम में सम्मिलित है और उसका संकेत दिया गया है, और इसके द्वारा व्यक्त किया गया है। (के अनुसार पर और जानकारी के लिए 1:7,9 पर टिप्पणी देखें)।

आयत 6. कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो। यह वाक्यांश अपने स्तुतिगान में पौलुस द्वारा कही गई बाद की बात से मेल खाता है (1:12, 14), परन्तु यहां जोर परमेश्वर के अनुग्रह पर है 'कि' शब्द को जो कुछ परमेश्वर ने मसीह में मनुष्यजाति के लिए किया है, उसके परिणाम के परिचय के रूप में समझा जाना चाहिए। परमेश्वर के अनुग्रह में उस के स्वभाव के साथ-साथ उसका काम भी आता है। इसलिए उसका महिमायुक्त अनुग्रह उसके व्यक्तित्व की शान, और उसकी योजना की चमक अपने लोगों से आराधना और स्तुति करने की पुकार करती है। परमेश्वर की सनातन मंशा परमेश्वर की स्तुति की पुकार करती है।

पौलुस ने परमेश्वर के अनुग्रह की अपनी चर्चा को जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत मेंत दिया शब्दों के साथ आगे बढ़ाया। उसने यह अनुग्रह हम पर सेंत मेंत दिया। कुछ अनुवादों में जिसके द्वारा उसने हमें स्वीकार्य बनाया है। परमेश्वर अनुग्रह है। उसने अनुग्रह के कारण हमारा पीछा किया है, अपने अनुग्रह के कारण उसने हमें घेरा है और अपने अनुग्रह से उसने हमें आशीष दी है, अन्त तक ताकि हम सदा तक उसकी स्तुति कर सकें।

उस प्रिय में मसीह के लिए कहा गया है और यह विचार आयतों 3 से 5 में व्यक्त किया गया है। यीशु को परमेश्वर के प्रिय पुत्र के रूप में दिखाया गया है (मत्ती 3:17; 17:5; कुलुस्सियों 1:13)। एंड्रयू टी. लिंकोन ने यह अर्थ दिया कि प्रिय पुत्र यीशु अति उत्तम है। मसीह में और मसीह के द्वारा परमेश्वर ने पापियों के लिए जो कुछ भी किया है वह केवल पाप पर उसका आंख मिचकाना नहीं था। परमेश्वर अनुग्रह, दया और प्रेम से तो भरा है, परन्तु वह पवित्रता और न्याय का भी परमेश्वर है। इसलिए पाप को दण्ड दिया जाना आवश्यक है, और क्रूस पर उसने यही किया। उन सब लोगों को जो मसीह

में हैं, वह स्थान मिल गया है, जहां पापियों पर उसकी दया के साथ परमेश्वर की पवित्रता और न्याय को संतुष्ट किया जा सकता है (देखें 3:23-26)। उन पर जो मसीह में हैं दिया गया अनुग्रह यूनानी भाषा में कृदंत सांकेतिक में व्यक्त किया गया, कालांतर में एक ही बार से पापियों के लिए पाप के लिए मसीह के सर्वपर्याप्त बलिदान में एक बार किया गया (इब्रानियों 10:12)।

बाइबल जांच पड़ताल के लिए आपको निमंत्रण देती है

चार्ल्स पुग

इतिहासकार लूका द्वारा बिरिया के लोगों की यह प्रशंसा ध्यान देने योग्य है, ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं कि नहीं (प्रेरितों 17:11)। यीशु मसीह के धर्म ने हमेशा से ईमानदारी से की जाने वाली समीक्षा को बुलावा दिया है और ऐसा होने पर जांच करने वालों को सराहा है। और जब सीधे मन वाले लोग मसीहियत के दावों की अच्छे तरीके से जांच कर लेते हैं तो उनके लिए मसीही विश्वास की सच्चाई स्पष्ट हो जाती है।

इतिहास में ऐसे लोगों के कई उदाहरण मिलते हैं जो या तो यीशु के दावों पर संदेह करते थे या उनके प्रति बेरुखी रखते थे, परन्तु सच्चे दिल से नये नियम की जांच पड़ताल करने वाले लोग विश्वासी बन गए। सन 1848 की एक पुस्तक जिसका नाम **द यंग मैन स गाइड अर्गेस्ट इन्फिडेलिटी** (अविश्वास के विरूद्धजवान आदमी की मार्गदर्शक) में लेखक 18वी सदी के अंत में डेनमार्क के प्रधानमंत्री की बात बताता है जिसने नास्तिकता या अधर्म की अपनी फिलॉस्फी को बढ़ावा देने की बड़ी कोशिश की। परन्तु उसने बर्नेट के मसीहियत के तर्कों की जांच को पढ़ा और अंत में उसके शक दूर हो गए जो पहले उसके मन में हुआ करते थे। उसने कहा, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मसीहियत ऐसे पक्के सबूतों के ऊपर टिकी हुई है... जांच पड़ताल करने पर मैंने उन्हें श्रेष्ठ पाया है, और यदि सही समय लेकर वे इसकी जांच करें तो कोई भी उन्हें सच्चाई से कायल हुए बिना उनकी जांच नहीं कर सकता। जैसे-जैसे मैं पढ़ता गया वैसे-वैसे मैं इस बात से कायल होता गया कि वे आरोप जो मसीहियत पर लगाए जाते हैं कितने गलत हैं।

जांच पड़ताल करने का निमंत्रण आज भी वैसा ही है। परमेश्वर कहता है, अपना मुकदमा लड़ो। अपने प्रमाण दो (यशायाह 21:18)। यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वाद-विवाद करें (यशायाह 1:18)।

आप और बाइबल

बॉबी

बहुत से लोग बाइबल के कम से कम किसी भाग पर विश्वास करने का दावा करते है। परन्तु धार्मिक लोगों में से भी बहुत से लोग यह विश्वास नहीं करते हैं कि धार्मिक तौर पर हमारी अगुआई के लिए परमेश्वर का वचन अपने आप में पर्याप्त है और कइयों का कहना होता है कि बाइबल सच नहीं है जबकि औरों का कहना होता है कि परमेश्वर की सेवा करने के लिए जो पूरी सच्चाई हमें चाहिए वह इसमें नहीं है। इन व्यवहारों के कारण लोगों ने वह देने के लिए जो उन्हें लगता है कि परमेश्वर के वचन में नहीं है, अपने धर्मसार या अकीदे लिख दिए हैं।

बेशक जब तक हम इस पर विश्वास नहीं करते, तब तक बाइबल हमारी सहायता नहीं करेगी। इब्रानियों के लेखक का कहना है, क्योंकि हमें उन्हीं की तरह सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुनने वालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा (इब्रानियों 4:2)। क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के लिये मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है। क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दें (1 कुरिन्थियों 1:18, 21)।

बाइबल खुद सत्य होने का दावा करती है। इसमें वह सब है जो हमें जानने की आवश्यकता है यानी वह सब जिस पर हमें विश्वास करने की आवश्यकता है, और वह सब जो हमें मसीह में सिद्ध बनने के लिए आवश्यक है (2 तीमुथियुस 3:15-17)। अपठित बाइबल (यानी बिना पढ़ी गई) किसी को लाभ नहीं पहुंचाएगी। वचन को सुनना और उसे न मानना आपके प्राण का उद्धार नहीं करेगा। ध्यान से इन बातों का अध्ययन करें।

परमेश्वर का वचन निर्मल है, परन्तु यह केवल उन्हीं को निर्मल करेगा जो इसकी आज्ञा को मानते हैं (1 पतरस 1:22)। परमेश्वर का वचन सिद्ध है; परन्तु यह केवल उन्हीं को सिद्ध करता है जो इस पर चला करते हैं (याकूब 1:22-25)। परमेश्वर का वचन उद्धार के निमित सामर्थ है, परन्तु यह केवल उन्हीं का उद्धार करता है जो इस पर विश्वास करते और इसकी आज्ञा को मानते हैं (रोमियों 1:16)। परमेश्वर का वचन सर्वदा बना रहता है; परन्तु यह केवल उन्हीं के काम का है जो सदा तक जीवित रहने के लिए परमेश्वर की इच्छा पर चलते हैं (1 यूहन्ना 2:17; मत्ती 7:21)। परमेश्वर का वचन जीवनदायक है; परन्तु यह जीवन केवल उन्हीं को देता है जो इसे व्यवहार में लाते हैं (यूहन्ना 3:3-8; लूका 8)। परमेश्वर का वचन सम्पूर्ण है परन्तु हमारे लिए सम्पूर्ण होने के लिए आवश्यक है कि हमारे विश्वास और व्यवहार इसकी शिक्षा से मेल खाते हों (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

यीशु मसीह

बेटी बर्टन चोट

पृथ्वी पर लगभग सभी मनुष्य किसी न किसी रूप में परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। सभी किसी न किसी धर्म को मानते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो परमेश्वर को अनेकों रूप में मानते हैं, और उन सब की आराधना करते हैं। क्योंकि वे उनमें से किसी को भी अप्रसन्न नहीं करना चाहते।

आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व प्रेरित पौलूस जब यूनान के अथेने नाम के नगर में गया था तो वहां उसने अनेकों ऐसे ही लोगों को देखकर उनसे कहा था, ''हे अथेने के लोगो, मैं देखता हूं कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए जब तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई जिस पर लिखा था, 'अनजाने ईश्वर के लिये' इसलिये जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसी का समाचार सुनाता हूं। जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया है, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर, हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता, न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है। क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं, और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिये बांधा है कि वे परमेश्वर को ढूढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पाएं, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं, जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, 'हम तो उसी के वंशज हैं।' सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों। इसलिये परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।'' (प्रेरितों 17:22-31)।

अक्सर सभी लोग धार्मिक स्वभाव के तो होते हैं, पर धार्मिक बातों को गम्भीरतापूर्वक न लेकर लोग अपने-अपने कामों में अधिकांश रूप में व्यस्त रहते हैं। लोग अपने अच्छे कामों पर अधिक भरोसा करते हैं। क्योंकि अक्सर सभी ऐसा सोचते हैं कि यदि वे एक अच्छा जीवन व्यतीत करेंगे तो परमेश्वर इससे प्रसन्न होगा, और परमेश्वर उन्हें, उनकी मृत्यु पश्चात्, अपने स्वर्ग में स्वीकार करेगा।

यह तो सही है कि सभी धर्म यह सिखाते हैं कि अच्छे काम करने चाहिए, और अच्छा और भला जीवन व्यतीत करना चाहिए। परन्तु प्रश्न यह है, कि क्या मनुष्य अपने अच्छे कामों के आधार पर ही परमेश्वर को प्रसन्न करके उसके स्वर्ग में प्रवेश कर लेगा?

नाना प्रकार के धार्मिक रीति-रिवाज़ों को मानकर लोग स्वयं अपने पापों से उद्धार

पाने की कोशिश में लगे रहते हैं। कुछ दान-बलिदान चढ़ाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो स्वयं अपने आपको दु:ख देकर अपने पापों का स्वयं ही प्रायश्चित करना चाहते हैं। और कुछ ऐसे भी हैं, जो सोचते हैं कि वे पृथ्वी पर बार-बार किसी न किसी रूप में जन्म लेकर किसी न किसी जन्म में स्वयं अपने पापों का दन्ड उठाकर अपने आप को स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बना लेंगे। पर इन सब बातों का निचोड़ एक ही है। अर्थात् यह, कि, प्रत्येक मनुष्य को अपने पापों का दण्ड स्वयं ही उठाना है, और प्रत्येक को स्वयं अपने आप ही अपने पापों का प्रायश्चित करना है।

किन्तु, परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में हमें एक अलग ही संदेश मिलता है। बाइबल के अनुसार, कोई भी मनुष्य स्वयं ही कुछ करके या कुछ देकर स्वयं अपने आपको अपने पापों से मुक्ति नहीं दिला सकता। मनुष्य को एक उद्धारकर्त्ता, एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है। और वह मुक्तिदाता है- यीशु मसीह।

परन्तु कोई यह कह सकता है, कि यीशु मसीह ही क्यों? संसार में अन्य और भी बहुत से महान् व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने मानवता के लिये बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण काम किये हैं। उन्होंने अच्छी-अच्छी शिक्षाएं दी हैं, धर्मों की स्थापना की है। लोग उनकी पूजा और आराधना करते हैं, उन्हें ईश्वर और भगवान और पवित्र मानते हैं। क्या वे सब भी मनुष्यों के मुक्तिदाता नहीं हो सकते?

पर क्या यह वास्तव में सच है? क्या यीशु मसीह और अन्य सभी धर्मों के संस्थापकों में कोई अन्तर नहीं है? और यदि है, तो फिर वह क्या है? यीशु मसीह में ऐसी कौन सी विशेषता है जो उसे सभी अन्य लोगों से अलग करती है? उसने मानवता के लिये ऐसा कौन सा बड़ा और विशेष काम किया है, जो उसे अन्य सभी 'महा-पुरुषों' से अलग बनाता है?

इसी बात को ध्यान में रखकर यीशु के इन शब्दों पर ध्यान दें। ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)।

इन शब्दों से हमें यह सीखने को मिलता है कि परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र उचित साधन केवल प्रभु यीशु मसीह ही है। परन्तु यीशु ने ऐसा क्यों कहा था? और यदि यह बात वास्तव में सच है, तो केवल वही सारे जगत का एकमात्र प्रभु और उद्धारकर्त्ता और मुक्तिदाता है। इसी एक बात को अच्छी तरह से समझने और जानने के उद्देश्य को लेकर प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है।

भविष्य

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

संसार के विषय में मसीही दृष्टिकोण यह है कि परमेश्वर ने आदि में सारे जगत की सृष्टि (उत्पत्ति) की थी। और एक दिन इस सारी सृष्टि का अंत हो जाएगा, और यह उस दिन होगा जब मसीह न्याय करने को आएगा। उस दिन सभी लोग परमेश्वर और यीशु मसीह के न्यायासन के सामने खड़े होंगे। उस दिन सभी लोग अपने-अपने प्रतिफल के अनुसार अनन्तकाल के लिये स्वर्ग में या नरक में भेजे जाएंगे। परमेश्वर ने

इस सम्पूर्ण जगत को, यीशु मसीह के द्वारा, अपनी महिमा के लिये सृजा था। (फिलिप्पियों 2:9-11; कुलुस्सियों 1:16)। जीवन का आरम्भ परमेश्वर से हुआ है, और अनन्त जीवन की आशा का आधार वही है (1 तीमुथियुस 6:16)। परमेश्वर की इस योजना में आपका स्थान कहाँ है? आपको अपने भविष्य के बारे में अवश्य ही सोचना चाहिए। (भजन. 90:12; याकूब 4:14; मत्ती 16:26)।

हम सब को एक न एक दिन मृत्यु का सामना अवश्य ही करना पड़ेगा। बाइबल ऐसी शिक्षा नहीं देती कि मनुष्य मरने के बाद फिर से किसी रूप में जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है। पर मनुष्यों के लिये एक ही बार मरना नियुक्त है। (इब्रानियों 9:27)। मनुष्य की देह तो नाशवान है, परन्तु एक आत्मिक प्राणी होने के कारण, मनुष्य आत्मिक रूप से सदा ही वर्तमान रहेगा। (2 कुरिन्थियों 5:1; 2 पतरस 1:13-14)। मृत्यु का अर्थ है आत्मा का शरीर से अलग हो जाना। (याकूब 2:26)। मनुष्य को स्वाभाविक रूप में मृत्यु से भय लगता है, परन्तु मसीह का सुसमाचार हमें मृत्यु के भय से मुक्त करता है। (भजन. 39:5; रोमियों 7:24; इब्रानियों 2:15; 1 कुरिन्थियों 15:26; फिलिप्पियों 1:21-23)। इसलिये हम सब को प्रभु यीशु मसीह और उसके सुसमाचार की आवश्यकता है। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि यीशु ने ''मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।'' (2 तीमुथियुस 1:10)। और यीशु मसीह ने ही मृत्यु के डंक, अर्थात पाप को नाश करके, हमें मृत्यु पर विजय पाने का अवसर दिया है। (1 कुरिन्थियों 15:54-57)।

मृत्यु के बाद, न्याय के दिन तक, मनुष्य की आत्मा किस स्थिति में या कहां रहती है? बाइबल में आत्मा के उस निवास स्थान को अधोलोक कहा गया है। कुछ लोग ऐसा भी सोचते हैं कि न्याय के दिन तक मनुष्यों की आत्माएँ सोती रहेंगी। बाइबल में यद्यपि मरे हुओं को 'सोए हुए' कहकर सम्बोधित किया गया है, पर इसका तात्पर्य इस बात से है कि जो लोग जिंदा हैं उनको मरे हुए सोए हुओं के समान प्रतीत होते हैं। (1थिस्सलुनीकियों 4:13)। सोए हुओं का अभिप्राय इस बात से है कि वे अब जीवित नहीं हैं (प्रकाशित. 14:13)। किन्तु बाइबल में कुछ स्थानों पर यह भी दर्शाया गया है कि जो लोग मर चुके हैं, वे अभी भी अपने होश में हैं। (2 कुरिन्थियों 5:8; लूका 16:19-31)। बाइबल के अनुसार, अधोलोक वोह स्थान है जहाँ मृत्यु के पश्चात आत्मा जाकर रहती है। अधोलोक दो भागों में बँटा हुआ है (लूका 16:26)। जो अच्छा स्थान है उसे स्वर्गलोक कहा गया है, और उसमें वे सब लोग हैं जो न्याय के दिन के बाद स्वर्ग में प्रवेश करके परमेश्वर के साथ रहेंगे। (लूका 23:39-43; प्रेरितों 2:27)। और जो बुरी जगह है उसे पीड़ाजनक स्थान कहा गया है, और उसमें वे सब लोग हैं जो न्याय के बाद नरक में जाएंगे। (लूका 16:23)। मृत्यु के समय प्रत्येक मनुष्य के हमेशा के आत्मिक निवास स्थान का चुनाव हो जाता है। मृत्यु के बाद किसी को भी दोबारा चुनाव करने का अवसर नहीं मिलता। किन्तु कुछ लोग ऐसा मानते हैं, और सिखाते हैं कि "परगेटोरी" नाम का एक ऐसा स्थान है जहां मसीही लोगों की आत्माएं आग से तड़प-तड़प के शुद्ध होने के लिये जाती हैं और फिर स्वर्ग में प्रवेश करती हैं। परन्तु बाइबल ऐसी शिक्षा कदापि नहीं देती। किन्तु बाइबल के अनुसार, यदि एक मसीही अपने मरने तक मसीह में विश्वासी बना रहता है, तो मसीह यीशु की प्रायश्चित-रूपी मृत्यु के कारण वोह स्वर्ग में प्रवेश करेगा। (1 यूहन्ना 1:6-10)। इसलिये परगेटोरी जैसी शिक्षा मसीह के लहू की शक्ति का अपमान करती है।

प्रभु यीशु मसीह जगत के अन्त के समय आकाश में प्रकट होगा। परन्तु कोई भी नहीं जानता कि वोह कब आएगा (मत्ती 24:44)। यीशु ने तो यहाँ, तक कहा था कि स्वयं वोह भी नहीं जानता कि वोह कब वापस आएगा, परन्तु केवल परमेश्वर पिता ही जानता है। (मत्ती 24:36)। सो ऐसे लोगों से ख़बरदार रहें जो यीशु के दोबारा आने के समय को नियुक्त करते रहते हैं, और कुछ संकेतों की ओर इशारा करते हैं। यीशु के दोबारा आने की प्रतीज्ञा स्वयं परमेश्वर ने की है, और वोह अपनी प्रतीज्ञा अवश्य ही पूरी करेगा। कुछ लोग परमेश्वर को अपने समय के अनुसार चलाने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु परमेश्वर जानता है कि उसे कब क्या करना है (2 पतरस 3:1-14)। क्योंकि हम नहीं जानते कि यीशु कब वापस आएगा, इसलिये हमें हमेशा उसके आने के लिये तैयार रहना चाहिए (मत्ती 24:44)। जगत के अन्त में प्रभु यीशु के आने

की शिक्षा के द्वारा हमें यह चेतावनी मिलती है कि हम उसके आने तक पृथ्वी पर पवित्र जीवन व्यतीत करें। जैसे कि पतरस ने लिखकर कहा था: ''जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए?'' (2 पतरस 3:11)। क्योंकि मसीही लोग जानते हैं कि यीशु के दोबारा आने पर उन्हें उद्धार और स्वर्ग में प्रवेश मिलेगा, इसलिये उसके आने को बाइबल में ''धन्य आशा'' कहकर सम्बोधित किया गया है। (तीतुस 2:13)।

यीशु के दोबारा आने पर सब मनुष्यों का पुनरुत्थान होगा। प्रभु यीशु ने इस प्रकार कहा था: ''इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वोह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, वे उसका शब्द सुनकर निकल आएंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे, और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।'' (यूहन्ना 5:28-29)। यीशु के आने तक जो लोग मर चुके होंगे वे सब जी उठेंगे, और जो लोग उस समय पृथ्वी पर जीवित होंगे, वे सब भी रूपान्तरित होकर, जी उठेंगे लोगों के साथ, प्रभु के न्याय का सामना करेंगे और अपने-अपने प्रतिफल के अनुसार अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे। (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)। बाइबल के अनुसार, पुनरुत्थान के समय जब मनुष्य की आत्मा का मिलन उसके पुनर्जीवित शरीर के साथ होगा, तो उसका रूप बदला हुआ होगा। मनुष्य की देह का वोह नया रूप चिरस्थायी अर्थात अविनाशी होगा। (1 कुरिन्थियों 15:35-57)। यह तो हम नहीं जानते कि वोह रूप वास्तव में कैसा होगा, पर इतना जानते हैं, कि वोह वैसा ही होगा जैसा जी उठने के बाद स्वयं यीशु का था। (1 यूहन्ना 3:2)।

प्रभु यीशु के दोबारा आने के बाद तुरन्त ही जगत का अन्त हो जाएगा, और सब मनुष्यों का न्याय किया जाएगा। परमेश्वर और मसीह के द्वारा हम सबका न्याय होगा। (यूहन्ना 5:22,27; प्रेरितों 17:30, 31; रोमियों 14:10; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:1; इब्रानियों 12:23)। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा, उन बातों के विषय में जो हमने अपने जीवन में की हैं, हम सबका न्याय करेगा। (प्रकाशित. 20:12; यूहन्ना 12:48; रोमियों 2:6,16)। उस दिन वोह सारे जगत के लोगों को दो भागों में बाँटेगा, वे जो बचे हुए होंगे और वे जो खोए हुए होंगे। (मत्ती 25:31-46)। बचे हुओं से वोह कहेगा: ''हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।'' (मत्ती 25:34)। और खोए हुओं से कहा जाएगा, ''हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।'' (मत्ती 25:41)। मसीही लोगों के लिये न्याय का दिन डरने का दिन नहीं है, क्योंकि उन्हें उस दिन दंडित नहीं पर महिमान्वित किया जाएगा। (रोमियों 8:1; मरकुस 9:41; लूका 6:35)।

''स्वर्ग'' एक ऐसा आत्मिक स्थान है जहां परमेश्वर के लोग हमेशा उसके साथ रहेंगे। स्वर्ग वास्तव में इतना उत्तम और सुन्दर है, कि मनुष्यों की भाषा में ऐसे शब्द ही उपलब्ध नहीं है जिनके द्वारा उसकी उत्तमता और सुंदरता को व्यक्त किया जा सके, इसलिये बाइबल में स्वर्ग का वर्णन अधिकांश रूप से उदाहरणपूर्ण या प्रतीकात्मक शब्दों के द्वारा ही किया गया है। (प्रकाशित. 21:1-22:5)। स्वर्ग की विशेषता इसलिये भी बड़ी है, क्योंकि वहां हम प्रभु यीशु मसीह के साथ रहेंगे। (यूहन्ना 14:1-3; फिलिप्पियों 1:23; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)। यह इस प्रकार से होगा जैसे कि हम एक विशाल दावत में शामिल होंगे। (मत्ती 22:1-14; प्रकाशित. 19:9) प्रेरित यूहन्ना को स्वर्ग का एक दृश्य दिखाया गया था, जिसका वर्णन यूहन्ना ने इन शब्दों में किया था :

फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, ''देख, परमेश्वर का डेरा मुनष्यों के बीच में है। वोह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। वोह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।

फिर उसने मुझे बिल्लोर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों-बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार

जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वोह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। फिर श्राप न होगा, और परमेश्वर और मेमने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। वे उसका मुंह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे"। (प्रकाशित. 21:3-4; 22:1-5)।

''नरक'' शब्द का उपयोग एक ऐसे स्थान के लिये किया गया है जहाँ परमेश्वर नहीं है। वास्तव में ''नरक'' शब्द एक ऐसे शब्द से लिया गया है जिसका उपयोग यरुशलेम नगर के बाहर बने कूड़ेदान से किया जाता था। उस जगह कूड़ा-करकट निरन्तर जलता रहता था। वहां हमेशा आग और धुआं रहता था और गन्दी-सड़ी बदबू आती रहती थी। अर्थात वोह एक ऐसा भयानक और गंदा स्थान है जहां जाने से सब बचना चाहेंगे। बाइबल में जिस प्रकार से स्वर्ग के लिये सांकेतिक और प्रतीकात्मक शब्दों को उपयोग में लाया गया है, उसी तरह से नरक की वास्तविकता को समझाने के लिये भी ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। नरक एक अंधकारमय स्थान है, क्योंकि वहां परमेश्वर नहीं हैं। (मत्ती 25:30; 2 पतरस 2:4; यहूदा 13)। नरक को एक ऐसा स्थान कहा गया है जहां धुंआ और आग है (मत्ती 13:42; 25:41; मरकुस 9:48; प्रकाशित. 20:10-15), और वोह एक पीड़ाजनक स्थान है (मत्ती 25:30; प्रकाशित. 14:11)। जो मनुष्य नरक में जाएगा, वोह उसमें से कभी भी बाहर नहीं निकल पाएगा। नरक में कोई आशा नहीं है। (मत्ती 25:10, 46; प्रकाशित, 14:11)। इसीलिये यीशु ने बार-बार अपनी शिक्षा में लोगों को नरक के विषय में चेतावनी दी थी। (लूका 12:4-5; 13:28; मत्ती 5:29-30; 10:28)।

ऐसे लोगों से सावधान रहें जो यह शिक्षा देते हैं कि यीशु पृथ्वी पर राज्य करने के लिये आएगा। वे लोग यीशु के दोबारा आने और जगत के अन्त के समय के लिये अलग-अलग तिथियों को भी नियुक्त करते रहते हैं। वे कहते हैं कि एक दिन मसीह अचानक से प्रकट होगा और अपने लोगों को कुछ वर्षों के लिये अपने साथ ले जाएगा। और फिर वोह उन लोगों के साथ कुछ समय के बाद पृथ्वी पर आएगा और 1000 वर्षों तक पृथ्वी पर राज्य करेगा। परन्तु बाइबल में हमें इस प्रकार की कोई शिक्षा नहीं मिलती। बाइबल हमें बड़े ही स्पष्ट शब्दों में बताती है, कि जब यीशु आएगा तो सब लोग जी उठेंगे, और सब का न्याय किया जाएगा, और सब अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे। यीशु न तो पृथ्वी पर दोबारा आएगा और न ही पृथ्वी पर आकर वोह राज्य करेगा। (यूहन्ना 5:28, 29; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17; इब्रानियों 9:28; प्रकाशित. 1:7; 1 कुरिन्थियों 15:23-24)।

जो लोग ऐसा मानते हैं कि यीशु पृथ्वी पर आकर एक हज़ार साल तक राज्य करेगा, विशेष रूप से वे दो गलतियां करते हैं। एक तो यह, कि वे ऐसा सोचते हैं कि परमेश्वर का राज्य एक भौतिक और इस संसार का राज्य है। परन्तु उसका राज्य, बाइबल की शिक्षानुसार, एक आत्मिक राज्य है, और वोह आज भी अपने लोगों के बीच में राज्य कर रहा है। (यूहन्ना 18:36; रोमियों 14:17)। यीशु तो आज भी राजाओं का राजा है, और उसका राज्य आज भी वर्तमान है (मत्ती 3:2; 11:12; 12:26-28; मरकुस 9:1; लूका 1:32-33; 16:16; प्रेरितों. 2:29-33; 7:56; इफिसियों 1:20; कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 2:9; 12:28; प्रकाशित. 1:6,9; 11:15)। दूसरे, वे लोग बाइबल में से बहुत से ऐसे हवाले देते हैं जो वास्तव में बहुत पहले ही पूरे हो चुके हैं, पर वे कहते हैं कि फलीस्तीन में उनका पूरा होना अभी बाकी है। अधिकांश रूप से जिन हवालों कि ओर वे ध्यान दिलाते हैं, वे या तो उस समय पूरे हो गए थे जब इसराएली बाबुल के दासत्व में से निकलकर लौट आए थे, या उस समय जब ई.स. 70 में रोमी सेना ने यरुशलेम को घेरकर उसे बर्बाद कर दिया था। (मत्ती 24:1-28; मरकुस 13:1-23; लूका 21:5-36)। वे लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में से पढ़कर लोगों को सिखाते हैं कि उसमें लिखी बातों का पूरा होना अभी बाकी है, पर वास्तव में सच्चाई यह है कि लगभग वे सारी बातें जिन्हें हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में आज पढ़ते हैं पहले ही पूरी हो चुकी हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक वास्तव में, पहली शताब्दी के उन मसीही लोगों के लिये लिखी गई थी जो मसीह में अपने विश्वास के कारण रोमी साम्राज्य द्वारा सताए जा रहे थे (प्रकाशित.

17:1-2,15-18)। क्योंकि मसीही लोग रोमी सम्राट और उनकी मूरतों के सामने झुकने से मना करते थे, इसलिये उन्हें सताया जा रहा था। सो उन्हें तसल्ली और सांत्वना देने के लिये प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखी बातों को उन्हें लिखा गया था। (प्रकाशित. 1:9; 2:10, 13; 6:9-11; 7:9, 13-14; 9:20-21; 12:17; 13:5-6,15-17; 14:9-13; 16:2, 5-6; 17:6; 18:24; 19:2,20; 20:4)।

केवल सुनने वाले नहीं

सूज़ी फ्रैड्रिक

एक बार यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि वे केवल परमेश्वर की इच्छा को सुनने वाले ही नहीं, बल्कि उसकी इच्छा को पूरा करने वाले बने। यीशु ने कहा था, ''इसलिये जो कोई मेरी यह बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आई, और आन्धियां चली, और उस घर से टकराई, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुद्धि मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आई, और आन्धियां चलीं, और उस घर से टकराई और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।'' (मत्ती 7:24-27)। ऐसा देखने में आता है कि बहुत सारे लोग बाइबल की शिक्षाओं को सुनना तो चाहते हैं परन्तु बहुत कम हैं जो उनको मानना चाहते हैं।

प्रेरित पौलूस अथेने नामक स्थान पर बहुत सारे लोगों से एक दिन बात कर रहा था। यह लोग बड़े ध्यान से उसे सुन रहे थे क्योंकि वे बड़ी उत्सुकता से नई बातों को जानना चाहते थे। पौलूस उनसे एक सच्चे परमेश्वर के विषय में तर्क-वितर्क करता है। उसने उन लोगों को यह भी बताया कि उद्धार पाने के लिये परमेश्वर उनसे क्या चाहता है। वहां कुछ लोग ऐसा भी सोच रहे थे कि पौलूस मूर्खता की बातें सिखा रहा है। परन्तु कुछ लोग बहुत उत्सुक थे तथा इन बातों के विषय में और जानना चाहते थे। कुछ ऐसे भी थे जो पौलूस की इन बातों को सुनते रहे तथा उन्होंने विश्वास किया। (प्रेरितों 17:16-34)। बाद में पौलूस कुरिन्थुस में गया तथा ''वहां आराधनालय के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया, और बहुत से कुरिन्थवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया।'' (प्रेरितों 18:8)।

आप इन लोगों में से किन्हें अपने जीवन का उदाहरण बनायेंगे? क्या परमेश्वर की इच्छा के विषय में आप केवल सुनना चाहेंगे, या उसकी आज्ञा को मानेंगे? क्या आप परमेश्वर की इच्छा को जानकर उसको मानेंगे ताकि आप अनन्त जीवन प्राप्त कर सकें?

परमेश्वर द्वारा प्रेरित, याकूब लिखते हुए कहता है, ''परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।'' (याकूब 1:22)।

आज अधिकतर लोग यह विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उनका यह विश्वास है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। परन्तु अधिकतर लोग यह विश्वास करते हैं कि उद्धार केवल विश्वास से होता है। परन्तु आप सबको गलतियों 3:26-27 पढ़ने की आवश्यकता है, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' बिना बपतिस्मा लिये हुए प्रभु यीशु को नहीं पहिना जा सकता। यदि आपने अभी तक बपतिस्मा नहीं लिया है, तो आपने मसीह को नहीं पहिना है। पतरस कहता है, ''और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है।'' (1 पतरस 3:21)।